बिहार में कृषि विकास की समस्याएँ

विश्वमोहन कुमार सिंह

डॉ० प्रेमचन्द्र यादव

कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। अधिकतर आबादी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है। पिछले 5 वर्षों में राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र के योगदान में वृद्धि हुई है। वर्तमान मूल्य पर वर्ष 2005–06 में कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य क्षेत्र का योगदान 21997 करोड़ रूपये था, जो वर्ष 2015–16 में बढ़कर 45730 करोड़ रूपये हो गया। फिर भी राज्य की अर्थव्यवस्था के चहुमुखी विकास के फलस्वरूप सकल घरेलू उत्पाद में कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य क्षेत्र का योगदान 26.29 प्रतिशत से घटकर 20.99 प्रतिशत हो गया। राष्ट्रीय किसान आयोग ने अपने प्रतिवेदन में देश की खाद्य सुरक्षा के लिए प्रदेश में खेती के तेजी से विकास को रेखांकित किया है।

स्वतंत्र होने के समय कृषि पद्धतियाँ बहुत पिछड़ी हुई थी। पिछली कई शताब्दियों से उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुए थे। सघन कृषि आवश्यक होती है, किन्तु उसका आधार पूँजी न होकर मानवीय श्रम है। इस दृष्टि से भारतीय और पाश्चात्य कृषि–पद्धतियों में आधारभूत अन्तर है। हमारे यहाँ सभी कृषि कार्य मानवीय श्रम द्वारा सम्पन्न किया जाता है, तथा कुछ सहायता पशुओं से भी ली जाती है। यही कारण [redacted] है कि एक ओर जनसंख्या का 65.5 प्रतिशत मात्र कृषि से जीविका पाता है और दूसरी ओर कृषि अधिक कुशलतापूर्वक नहीं हो पाती है। इसके विपरीत पाश्चात्य देशों में केवल बहुत थोड़ी जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है (संयुक्त राज्य 2.1:, कनाडा 2.8:ए फ्रांस 4.5:ए जापान 5.5:)। फिर भी पूँजी के विनियोग द्वारा मशीनों, खादों तथा कीटाणुनाशक रसायनों के प्रयोग आदि से कृषि की कुशलता और प्रति हेक्टर उपज बढ़ी हैं।